International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 631-632

वाल्मीकि रामायण में लोकभावना

डॉ० योगिता
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

साराशं
जगत् की विविध भाषाओं में जो उच्चकोटि के महाकाव्य हैं, उनमें वाल्मीकीय रामायण का सर्वोत्तम स्थान है। जिस आस्तिकता, धार्मिकता, प्रभुशक्ति, उदात्त एवं दिव्यभावनाओं और उच्च नैतिक आदर्शों तथा उपदेशों का वर्णन रामायण में मिलता है उसका अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। यह पवित्र ग्रन्थ प्राचीन आर्य सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है। इसमें प्रदत्त उपदेश वर्तमानकालीन समाज के कल्याण में सहायक हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य रामायण में प्रमुख स्थानों पर दर्शाए गए उपदेशों का वर्णन करना है।

मूल शब्द : महाकाव्य, राज्याभिषेक, नैतिक कर्तव्य, धर्मानुकूल दण्ड, वैदिक राजनीति

प्रस्तावना

जगत् की विविध भाषाओं में जो उच्चकोटि के महाकाव्य हैं, उनमें वाल्मीकीय रामायण का सर्वोत्तम स्थान है। जिस आस्तिकता, धार्मिकता, प्रभुशक्ति, उदात्त एवं दिव्यभावनाओं और उच्च नैतिक आदर्शों तथा उपदेशों का वर्णन रामायण में मिलता है। उसका अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। यह पवित्र ग्रन्थ प्राचीन आर्य सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है। इसमें प्रदत्त उपदेश वर्तमानकालीन समाज के कल्याण में सहायक है। प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य रामायण में प्रमुख स्थानों पर दर्शाए गए उपदेशों का वर्णन करना है।

परिषद् द्वारा राम के राज्याभिषेक का अनुमोदन किये जाने पर दशरथ ने उन्हें अपने गले से लगाया तथा अपने समान ऊँचे आसन पर बिठा कर कहा कि तुम मेरी ज्येष्ठ पत्नी के अनुरूप ही मेरे पुत्र हो, तुम्हारे अन्दर सब उत्तम गुण विद्यमान हैं और तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो, क्योंकि तुमने अपने गुणों से प्रजा को प्रसन्न कर रखा है इसलिये तुम कल पुष्यनक्षत्र में युवराज पद को प्रापत करो। यद्यपि तुम स्वभाव से ही विनम्र एवं गुण सम्पन्न हो यथापि स्नेहवश मैं तुम्हारे हित की बात कहता हूँ... तुम्हें चाहिये कि तुम और अधिक विनय को धारण करके सदा जितेन्द्रिय बनो तथा काम और क्रोध से उत्पन्न व्यसनों को छोड़ दो। परोक्ष एवं प्रत्यक्ष की वृत्ति को धारण करके अमात्यादि सब प्रकृतियों को सदा प्रसन्न करो। अन्न के भण्डार को तथा अस्त्र–शस्त्र के भण्डार को सदा अन्न और अस्त्र–शस्त्र के संग्रह से बढ़ाते रहो। देखो! जो राजा अपनी प्रजा को प्रसन्न रखकर राज्य करता है उससे उसके मित्र वैसे ही प्रसन्न रहते हैं जैसे देवता अमृतपान से प्रसन्न होते हैं। अतः हे वत्स! तुम्हें अपने आपको संयम में रखकर जैस मैंने कहा है वैसा ही आचरण करो। इस प्रकार रामायण के अयोध्याकाण्ड में एक राजा का क्या नैतिक कर्त्तव्य होना चाहिये, इस विषय में उपदेश दिया गया है।

भरत जब राम को अयोध्या वापिस लाने के लिये वन में जाते है तो दुःखी भाई को देखकर रामचन्द्र ने जिस भाव से भरत से सब कुशलेक्षम जानना चाहा उसमें परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रुप से लोककल्याण के गूढ़ रहस्य का उपदेश भी दिया गया है। वे कहते हैं– हे भरत! विद्वान्, धर्म कार्यों में तत्पर, महातेजस्वी इक्ष्वाकुंवश के आचार्य ब्राह्मण वसिष्ठ यथायोग्य सत्कृत तो होते हैं? माता कौसल्या और माता कैकेयी और माता सुमित्रा तो सुखपूर्वक है। हे तात! तुम देव, पितर नौकरों, गुरुओं और पिता के समान बड़े–बूढ़ों, वैद्यों और ब्राह्मणों का सत्कार तो करते हो। क्या तुमने अपने समान विश्वसनीय वीर, नीतिशास्त्रज्ञ, लोभ में न फंसने वाले, प्रामाणिक कुलोत्पन्न और संकेत को समझने वाले व्यक्तियों को मन्त्री बनाया है? क्योंकि मन्त्रणा को धारण करने वाले नीतिशास्त्रविशारद सचिवों के द्वारा गुप्त रखी हुई मन्त्रणा ही राजाओं की विजय का मूल होती है। तुम हजार मूर्खों की अपेक्षा एक बुद्धिमान् परामर्शदाता को रखना अच्छा समझते हो न? क्योंकि संकट के समय बुद्धिमान् व्यक्ति ही महान् कल्याण करता है। तुम उत्तम नौकरों को उत्तम कार्यों में, मध्यम नौकरों को मध्यम कार्यों में और साधारण नौकरों को साधारण कार्यों में लगाते हो न? तुम नास्तिक ब्राह्मणों की संगति तो नहीं करते? अपने को पंडित समझने वाले ये मूर्ख धर्मानुष्ठान से लोगों का चित्त हटाकर उन्हें नरक भेजने में बड़े कुशल होते हैं। धनी और निर्धन का झगड़ा होने पर तुम्हारे बहुश्रुत मन्त्री लोभरहित होकर दोनों का मुकदमा न्यायपूर्वक निबटाते हैं या नहीं? हे भरत! इस प्रकार धर्मानुकूल दण्ड धारण करने वाला नीतिज्ञ राजा प्रजा का पालन करके सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी हो मरने के पश्चात् स्वर्ग और उत्तम जन्म को प्राप्त करता है। इस प्रकार मर्यादापुरुषोतम श्रीराम ने भरत को वैदिक राजनीति एवं राजा द्वारा अनुष्ठेय आचरण का उपदेश अत्यन्त सुन्दर एवं मार्मिक रुप दे दिया है। इसी प्रकार एक स्थल पर अनुसूया सीता को उपदेश देती हुई कहती है कि पति चाहे वन में रहे अथवा नगर में, सुख सम्पन्न हो या दुःखग्रस्त – सब दिशाओं में जिन स्त्रियों को अपना पति ही सर्वप्रिय है, उन्हीं स्त्रियों को कल्याणकारी तथा श्रेष्ठ लोकों की प्राप्ति होती है। अरण्यकाण्ड के सप्तम सर्ग में सीता राम को कहती है कि कामज भयंकर पाप है तथा शेष दो परस्त्रीगमन और आकरण प्राणियों की हिंसा उससे भी बढ़कर है। धर्म से धन की प्राप्ति होती है, धर्म से ही सुख की प्राप्ति होती है। अधिक क्या धर्म से सब कुछ प्राप्त हो सकता है। अतः संसार में धर्म ही सार है।

युद्धकाण्ड के पंचम सर्ग में रावण अपने मन्त्रियों से मन्त्रणा करते हुए कहता है कि संसार में उत्तम, मध्यम और अधम तीन प्रकार के मनुष्य हुआ करते हैं। जो मनुष्य हितैषी और परामर्श देने की योग्यता रखने वालों अथवा अपने समान सुख–दुःख भोगने वाले मित्रों अथवा अपने से अधिक योग्य व्यक्तियों के साथ विचार–विमर्श कर कार्य का आरम्भ करता है – ऐसे पुरुष को उत्तम पुरुष कहते हैं। जो मनुष्य अकेला ही प्रस्तुत विषय के ऊँच–नीच पर विचार

कर और धर्म का आश्रय लेकर अकेला ही कार्यरम्भ कर देता है वह मध्यम पुरुष कहलाता है। जो मनुष्य गुण दोषों के विचार किये बिना और धर्म का सहारा त्याग कर तथा मैं अकेला ही इस कार्य को कर लूँगा– ऐसा निश्चय करके कार्यारम्भ कर दें और फिर उसकी अपेक्षा करे तथा कार्य को बीच में ही छोड़ दे– वह पुरुष अधम कहलाता है। जिस प्रकार पुरुष उत्तम, मध्यम और अधम कोटि के हैं उसी प्रकार मन्त्र भी उत्तम, मध्यम और अधम तीन प्रकार के होते हैं। मन्त्रीगण एकमत होकर जहाँ शास्त्रोक्त विचार–विमर्श करते हैं, वह उत्तम मन्त्र कहलाता है। जिस विचार का निर्णय करने के लिये मन्त्रीगण आरम्भ में अेनक मत होकर भी अन्त में एक मत हो जाएँ उस सलाह को पण्डित भोग मध्यम मन्त्र कहलाते है और जिस मन्त्र में सम्मतिदाता एक दूसरे की सम्मति के विरुद्ध ही कहें, सब एक मत न हो तथा एक मत होने पर भी जिसमें कोई कल्याण न हो, वह मन्त्र अधम कहलाता है।

विभीषण रावण को समझाते हुए एक स्थल पर कहते हैं कि परस्त्री–प्रसंग कीर्ति का नाशक है, आयु को क्षीण करने वाला है, धन को नष्ट करने वाला है और पाप का प्रवर्तक है। इसी प्रकार माल्यवान भी रावण को समझाते हुए कहता है कि हे राजन्! जो राजा चौदह विधाओं में निष्णात होकर नीतिशास्त्रानुसार कार्य करता है वह बहुत समय तक प्रजा पर शासन करता हुआ ऐश्वर्य भोगता है और शत्रुओं को अपने वश में रखता है और जो राजा समय के अनुसार शत्रु के साथ सन्धि और विग्रह करके अपने को शक्तिशाली बनाता है, वहीं महान् ऐश्वर्य को भोगता है।

निष्कर्षत

यह कहा जा सकता है कि रामायण में जीवन के प्रत्येक पक्ष को उजागर किया गया है। एक राजा का उसकी प्रजा के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिये? पिता की आज्ञा का पालन पुत्र को संकल्पित होकर करना चाहिये। माता का पुत्र पर वात्सल्य, भाईयों में भातृ–प्रेम, विद्वानों के साथ मन्त्रणा, गुरुओं के प्रति श्रद्धा, मित्रों के प्रति सहृदयता इत्यादि बिन्दुओं पर रामायण में लोककल्याण को ध्यान में रखते हुए उपदेश दिया गया है। मुझे यहाँ यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि वर्तमान सन्दर्भ में यदि रामायणोक्त उपदेश के अनुसार जीवन यापन किया जाये तो हमारा देश फिर से विश्वगुरु बन सकता है और रामराज्य का स्वप्न फिर से साकार हो सकता है।

सन्दर्भ

1. ज्येष्ठायामसि में पत्न्यां सदृश्यां सदृशः सुतः।
   उत्पन्नसत्वं गुणश्रेष्ठो मम रामात्मणः प्रियः।
   यत्स्वया प्रजाश्चेमाः स्वगुणैरनुंरजिताः।
   तस्मात्वं पुष्ययोगेन यौवराज्यमवाप्नुहि।
   कामातस्त्वं प्रकृत्यैव विनीतो गुणवानसि।
   गुणवत्यपि तु स्नेहात्पुत्र वक्ष्यामि ते हितम्।
   रामायण, अयोध्याकाण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक संख्या 21, 22, 23
2. भूयो विनयमास्थाय भव नित्यं जितेन्द्रियः।
   कामक्रोधसमुत्थानि त्यजेथा व्यसनानि च।
   परोक्षया वर्तमानो वृत्या प्रत्यक्षया तथा।
   अमात्यप्रभृतः सर्वाः प्रकृतीश्चानुरंजय।
   कोष्ठज्ञगरायुधागारैः कृत्वा सन्निचयान् बहून्।
   तुष्टानुरक्तप्रकृतिर्यः पालयति मेदिनीम्।
   तस्य निन्दति मित्राणि लब्ध्वामृतमिवायराः।
   तस्मात्पुत्र त्वमात्मानं नियम्येव समाचार।
   उपरिवत्, अयोध्याकाण्ड, तृतीय सर्ग, 27–27
3. रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 70, श्लोक संख्या 1–5
4. अयोध्याकाण्ड, सर्ग 70, श्लोक संख्या 6, 8, 9
5. कच्चित्सहस्रान् मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम्।
   पण्डितो ह्मर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत्।
   कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः।
   जघन्यास्तु जघन्येषु भृत्या कर्मसु योजिताः।
   उपरिवत्, अ. का. सर्ग 70, 15, 16
6. कच्चिन्न लौकायतिकान् ब्राह्मणांस्तात सेवसे।
   अनर्थकुशला होते बालाः पण्डितमानिनः उपरिवत्, 28
7. उपरिवत्, 40
8. उपरिवत्, 54
9. नगरस्थो वनस्थो वा पापो वा यदि वाशुभः।
   यासां स्त्रीणां प्रिया भर्ता तासां लोका महोदया उपरिवत्, सर्ग 82, श्लोक 11
10. अरण्यकाण्ड, सप्तम सर्ग, श्लोक संख्या 3
11. धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्।
    धर्मेण लभते सर्व धर्मसारमिदं जगत् उपरिवत्, श्लोक संख्या 12
12. उपरिवत्, युद्धकाण्ड, पंचम सर्ग, श्लोक संख्या 6–10
13. यथेमे पुरुषा नित्युत्तमाधममध्यमाः।
    एवं मन्त्रा हि विज्ञेया उत्तमाधममध्यमाः।
    एकमत्यमुपगम्य शास्त्रदृष्टेन चक्षुषा।
    मन्त्रिणो यत्र निरतास्तमाहुर्मन्त्रमुत्तमम्।
    बह्वयोऽपि मतयो भूत्वा मन्त्रिणामर्थनिर्णये।
    पुनर्यत्रैकतां प्राप्ताः स मन्त्रो मध्यमः स्मृतः।
    अन्योऽन्यं मतिमास्थाय यत्र सम्प्रतिभाष्यते।
    न चैकमत्ये श्रेयोऽस्ति मन्त्रः सोऽधम उच्यते।
    उपरिवत्, श्लोक संख्या 11, 12, 13, 14
14. अयशस्यमनायुष्यं परदाराभिमर्शनम्।
    अर्थक्षयकरं घोरं पापस्य च पुनर्भवम्।
    उपरिवत्, युद्धकाण्ड, सत्या सर्ग, श्लोक 12
15. विद्यास्वभिविनीतो यो राजा राजन्नयानुगः।
    स शक्ति चिरमैश्चर्यमरींश्च करुते वश।
    सन्दधानो हि कायेन विगश्ह्नश्चारिभिः सह।
    स्वपक्षे वर्धनं कुर्वन्महदैश्वर्यमश्नुते उपरिवत्, द्वाविंश सर्ग, श्लोक 5, 6